1. यूरोप में राष्ट्रवाद

राष्ट्रवाद– राष्ट्रवाद एक ऐसी भावना है जो किसी विषेश भौगोलिक, सांस्कृतिक या सामाजिक परिवेश में रहने वाले लोगों में एकता का वाहक बनती है।

अर्थात्

राष्ट्रवाद लोगों के किसी समूह की उस आस्था का नाम है जिसके तहत वे खुद को साझा इतिहास, परम्परा, भाषा, जातीयता या जातिवाद और संस्कृति के आधार पर एकजुट मानते हैं।

राष्ट्रवाद का अर्थ– राष्ट्र के प्रति निष्ठा या दृढ़ निश्चय या राष्ट्रीय चेतना का उदय, उसकी प्रगति और उसके प्रति सभी नियम आदर्शों को बनाए रखने का सिद्धांत।

अर्थात्

अपने राष्ट्र के प्रति प्रेम की भावना को राष्ट्रवाद कहते हैं।

बीजारोपण– राष्ट्रवाद की भावना का बीजारोपण यूरोप में पुनर्जागरण के काल (14वीं और 17वीं शताब्दी के बीच) से ही हो चुका था। परन्तु 1789 ई॰ की फ्रांसीसी क्रांति से यह उन्नत रूप में प्रकट हुई।

यूरोप में राष्ट्रीयता की भावना का विकास फ्रांस की राज्यक्रांति और उसके बाद नेपोलियन के आक्रमनों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

फ्रांसीसी क्रांति ने राजनीति को अभिजात्य वर्गीय (ऐसे उच्चतम लोगों का वर्ग, जिनमें जमींदार, नवाब, महाजन और रईस लोग होते हैं।) परिवेश से बाहर कर उसे अखबारों, सड़कों और सर्वसाधारण की वस्तु बना दिया।

वियना कांगेस क्या है ?

यूरोपीय देशों के राजदूतों का एक सम्मेलन था जो सितम्बर 18 से 14 जून 1815 को आस्ट्रिया की राजधानी वियना में आयोजित किया गया था।

नेपोलियन कौन था ?

नेपोलियन एक महान सम्राट था जिसने अपने व्यक्तित्व एवं कार्यों से पूरे यूरोप के इतिहास को प्रभावित किया।

अपनी योग्यता के बल पर 24 वर्ष की आयु में ही सेनापति बन गया।

उसने कई युद्धों में फ्रांसीसी सेना को जीत दिलाई और अपार लोकप्रियता हासिल कर ली फिर उसने पीछे मुड़कर नहीं देखा और फ्रांस का शासक बन गया।

उदारवादी से क्या समझते हैं ?

उदारवादी लातिनी भाषा के मूल्य पर आधारित है जिसका अर्थ है 'आजाद'

उदारवाद तेज बदलाव और विकास को प्राथमिकता देता है।

रूढ़ीवादी से क्या समझते हैं ?

ऐसा राजनितिक दर्शन परंपरा, सीापित संस्थाओं और रिवाजों पर जोर देता है और धीरे–धीरे विकास को प्राथमिकता देता है।

विचारधारा– एक खास प्रकार की सामाजिक एवं राजनीतिक दृष्टिकोण इंगित करने वाले विचारों का समुह विचारधारा कहलाता है।

यूरोप में राष्ट्रवादी चेतना की शुरुआत फ्रांस से होती है।

नेपोलियन का शासनकाल

जब नेपोलियन फ्रांस पर अपना शासन चलाना शुरू किया तो उन्होंने प्रजातंत्र को हटाकर राजतंत्र स्थापित कर दिया।

नगरिक संहिता या नेपोलियन की संहिता 1804

1. कानून के समक्ष सबको बराबर रखा गया।
2. संपत्ति के अधिकार को सुरक्षित रखा गया।
3. भू–दासत्व और जागीरदारी शुल्क से मुक्ति दिलाई।

जागीरदारी– इसके तहत किसानों, जमींदारों और उद्योगपतियों द्वारा तैयार समान का कुछ हिस्सा कर के रूप में सरकार को देना पड़ता था।

16वीं शताब्दी से पहले यूरोपीय समाज दो वर्गों में विभाजित था।

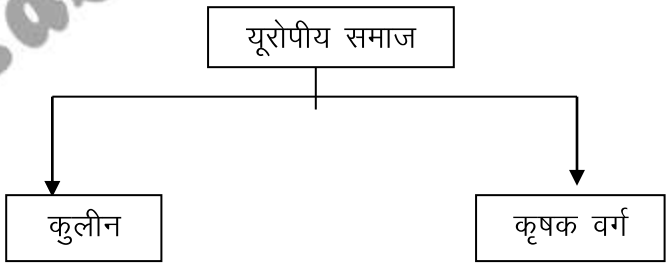

कुलीन वर्ग उच्च वर्ग के थे, जो शासन के साथ सेना के उच्च पदों पर थे।

निम्न वर्ग में कृषक वर्ग आते थे, जो शोषित थे।

बीच में एक और वर्ग जुड़ गया। जिसे **मध्यम वर्ग** कहा गया।

वियना सम्मेलन– नेपोलियन के पतन के बाद यूरोप की विजयी शक्तियाँ ऑस्ट्रिया की राजधानी वियना में 1815 ई॰ में एकत्र हुई, जिसे वियना सम्मेलन के नाम से जाना जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य फिर से पुरातन व्यवस्था

Excellence Coaching Institute
By - Tabrej Alam

को स्थापित करना था। इस सम्मेलन का मेजबानी आस्ट्रिया के चांसलर मेटरनिख ने किया।

इससे सम्मेलन के द्वारा इटली, जर्मनी तथा फ्रांस में पुरात्तन व्यवस्था स्थापित की गई।

फ्रांस में वियना व्यवस्था के तहत बूर्वों राजवंश को पुनर्स्थापित किया गया तथा लुई 18 वाँ फ्रांस का राजा बना।

मेटरनिख युग– 1815 के वियना सम्मेलन क बाद एक तरफ नेपोलियन युग का अंत तथा मेटरनिख युग की शुरूआत हुई। जो 1848 तक चलती रही। 1815–48 तक के काल को मेटरनिख युग के नाम से जाना जाता है।

जुलाई 1830 की क्रांतिः इस क्रांति का मुख्य कारण लुई 18 वाँ द्वारा किए गए सुधारों के साथ छेड़–छाड़ करना तथा चार्ल्स–X का निरंकुश होना था। उसने फ्रांस में उभर रही राष्ट्रीयता की भावना को दबाने का कार्य किया। उसके द्वारा पोलिग्नेक को प्रधानमंत्री बनाया गया। इसने समान नागरिक संहिता को समाप्त कर अभिजात्य अर्थात उच्च वर्ग को विशेष आधिकारों से विभूषित किया। जिसके कारण सुधारवादियों ने इसका विरोध प्रारंभ कर दिया। चार्ल्स–X ने इस विरोध के प्रतिक्रिया में 25 जुलाई 1830 ई॰ को चार अध्यादेशों (कानून) के द्वारा उदार तत्वों का गला घोंटने का प्रयास किया। जिसके विरोध में पेरिस में क्रांति की लहर दौड़ गई और फ्रांस में 28 जून 1830 ई॰ को गृहयुद्ध आरम्भ हो गया। जिसे जुलाई 1830 की क्रांति कहते हैं।

परिणाम– चार्ल्स–X राजगद्दी छोड़कर इंग्लैंड पलायन कर गया और इस प्रकार फ्रांस में बूर्वो वंश के शासन का अंत हो गया। बूर्वो वंश के स्थान पर आर्लेयेंश वंश के शासक लुई फिलिप को शासक बनाया गया।

1830 की क्रांति का प्रभाव

इस क्रांति ने वियना क्रांग्रेस के प्रभाव को समाप्त किया।

इसका क्रांति ने अन्य देशों जैसे यूनान, पोलैंड तथा हंगरी के साथ पूरे यूरोप में राष्ट्रीयता तथा एकीकरण के लिए आंदोलन शुरू हो गए।

1848 की क्रांति

यह क्रांति आर्लेयेंस वंश के शासक लुई फिलिप के खिलाफ हुआ।

इस क्रांति का मुख्य कारण **'स्वर्णिम मध्यम वर्गीय नीति'** को समाप्त करना तथा **गीजो** को प्रधानमंत्री बनाना था।

लुई फिलिप ने पुंजीपति वर्ग के लोगों को साथ रखना पसंद किया, जिनकी संख्या बहुत कम थी।

लुई फिलिप ने गीजो को प्रधानमंत्री नियुक्त किया, जो कट्टर प्रतिक्रियावादी था।

प्रधानमंत्री गीजो किसी भी तरह के वैधानिक, सामाजिक और आर्थिक सुधारों के विरुद्ध था।

लुई फिलिप की विदेश नीति अच्छी नहीं थी।

इसके शासन काल में देश में भुखमरी एवं बेरोजगारी व्याप्त होने लगी, जिससे गीजो की आलोचना होने लगी।

सुधारवादियों ने 22 फरवरी 1848 ई० को पेरिस में थियर्स के नेतृत्व में एक विशाल भोज का आयोजन किया।

जगह–जगह अवरोध लगाए गए और लुई फिलिप को गद्दी छोड़ने पर मजबुर किया गया।

24 फरवरी को लुई फिलिप ने गद्दी त्याग किया और इंगलैंड चला गया।

उसके बाद नेशनल एसेम्बली ने गणतंत्र की घोषणा करते हुए 21 वर्ष से ऊपर के सभी व्यस्कों को मताधिकार प्रदान किया और काम के अधिकार की गारंटी दी।

1848 की क्रांति का प्रभाव

इस क्रांति ने न सिर्फ पुरातन व्यवस्था का अंत किया बल्कि इटली, जर्मनी, ऑस्ट्रीया, हालैंड, स्वीट्जरलैंड, डेनमार्क, स्पेन, पोलैंड, आयरलैंड तथा इंगलैंड प्रभावित हुए।

इटली का एकीकरण

एकीकरण का अर्थ– एकजुट होना।

इटली के एकीकरण में बहुत सारी धार्मिक, राजनीतिक और भौगोलिक समस्याएँ थी।

इसके अलावा आर्थिक और प्रशासनिक समस्याएँ भी मौजूद थीं। साथ ही विदेशी राष्ट्र ऑस्ट्रीया का हस्तक्षेप था।

इसके एकीकरण में नेपोलियन ने भी मख्य भूमिका निभाई तथा राष्ट्रवाद को बढ़ावा दिया।

नेपोलियन के पतन (1814) के बाद वियना काँग्रेस (1815) द्वारा इटली को पुराने रूप में लाने के उद्देश्य से इटली के दो राज्यों पिडमाउण्ट और सार्डिनिया का एकीकरण कर दिया।

इस प्रकार इटली के एकीकरण की दिशा तय होने लगी।

यहाँ 1820 में नागरिक आंदोलन भी हुए।

Excellence Coaching Institute By- Tabrej Alam

इटली में एक गुप्त दल **'कार्बोनरी'** का गठन राजतंत्र को समाप्त करने के उद्देश्य से किया गया, जो छापामार युद्ध करती थी।

फ्रांस की 1830 की क्रांति से प्रभावित होकर इटली में भी नागरिक आंदोलन हुए लेकिन इसे ऑस्ट्रया के चांसलर मेटनरिख के द्वारा दबा दिया गया।

नागरिक आंदोलन का उपयोग कर मेजिनी उत्तरी तथा मध्य इटली को एकीकृत कर एक गणराज्य बनाना चाहता था, लेकिन मेटरनिख ने इन आंदोलनों को दबा दिया।

फलस्वरूप मेजिनी को इटली से पलायन करना पड़ा।

मेजिनी **'कोर्बोनरी'** दल का सदस्य था।

इटली के एकीकरण में मेजिनी का योगदान

मेजिनी साहित्यकार, गणतांत्रिक विचारों के समर्थक और योग्य सेनापति था।

मेजिनी में आदर्शवादी गुण अधिक और व्यावहारिक गुण कम थे।

1831 में उसने **'यंग इटली'** की स्थापना की, जिसने नवीन इटली के निमार्ण में महत्वपूर्ण भाग लिया।

इसका उद्देश्य इटली प्रायद्वीप से विदेशी हस्तक्षेप समाप्त करना तथा संयुक्त गणराज्य स्थापित करना था।

1834 में **'यंग यूरोप'** नामक संस्था का गठन कर मेजिनी ने यूरोप में चल रहे राष्ट्रीय आंदोलन को भी प्रोत्साहित किया।

1848 में जब फ्रांस सहित पूरे यूरोप में क्रांति का दौर आया तो मेटरनिख को ऑस्ट्रीया छोड़कर जाना पड़ा।

इसके बाद इटली की राजनीति में पुनः मेजिनी का आगमन हुआ।

मेजिनी पूरे इटली का एकीकरण कर एक गणराज्य बनाना चाहता था, लेकिन सार्डिनिया–पिडमाउंट का शासक चार्ल्स एलबर्ट अपने नेतृत्व में सभी प्रांतो का विलय चाहता था।

पोप इटली को धर्मराज्य बनाना चाहता था।

इस तरह से विचारों के टकराव के कारण इटली के एकीकरण का मार्ग अवरूद्ध हो गया।

बाद में ऑस्ट्रीया द्वारा इटली के कुछ भागों पर आक्रमण किये जाने लगे जिसमें सार्डिनिया के शासक चार्ल्स एलबर्ट की पराजय हो गई।

ऑस्ट्रीया के हस्तक्षेप से इटली में जनवादी आंदोलन को कुचल दिया गया।

इस प्रकार मेजिनी की पुनः हार हुई और वह पलायन कर गया।

इटली के एकीकरण का द्वितीय चरण

इटली के एकीकरण के द्वितीय चरण में विक्टर इमैनुएल, काउंट कावूर तथा गैरीबाल्डी का अहम योगदान है।

विक्टर इमैनुएल :

1848 तक इटली में एकीकरण के लिए किए गए प्रयास असफल ही रहे।

इटली में सार्डिनिया–पिडमाउण्ट का नया शासक 'विक्टर इमैनुएल' राष्ट्रवादी विचारधारा का था और उसके प्रयास से इटली के एकीकरण का कार्य जारी रहा।

अपनी नीतियों के लागू करने के लिए विक्टर ने 'काउंट कावूर' को प्रधानमंत्री नियुक्त किया।

काउंट कावूर :

कावूर एक सफल कुटनीतिज्ञ एवं राष्ट्रवादी था। वह इटली के एकीकरण में सबसे बड़ी बाधा ऑस्ट्रीया को मानता था।

इसलिए उसने ऑस्ट्रीया को पराजित करने के लिए फ्रांस के साथ दोस्ती का हाथ बढ़ाया तथा क्रिमीया के युद्ध 1853–54 में फ्रांस के आग्रह के बिना शामिल हो गया।

युद्ध समाप्त होने के बाद पेरिस की शांति सम्मेलन में फ्रांस तथा ऑस्ट्रीया के साथ पिडमाउण्ट को भी बुलाया गया।

इस सम्मेलन में कावूर ने इटली में ऑस्ट्रीया के हस्तक्षेप को गैरकानूनी बताया।

इसने इटली की समस्या को सम्पूर्ण यूरोप की समस्या बना दिया।

फ्रांस के शासक नेपोलियन III ने कावूर से एक संधि के तहत ऑस्ट्रीया के खिलाफ पिडमाउण्ट को सैन्य समर्थन देने का वादा किया।

1859–60 में ऑस्ट्रीया तथा पिडमाउण्ट में सीमा संबंधी विवाद के कारण युद्ध शुरू हो गया। इस युद्ध में फ्रांस ने इटली के समर्थन में अपनी सेना उतार दी।

इस प्रकार 1862 ई० तक दक्षिण इटली रोम तथा वेनेशिया को छोड़कर बाकी रियासतों का विलय रोम में हो गया और सभी ने विक्टर इमैनुएल को शासक माना।

गैरीबाल्डी :

गैरीबाल्डी पेशे से एक नाविक था और मेजिनी के विचारों का समर्थक था।

Excellence Coaching Institute By - Tabrej Alam

गैरीबाल्डी ने अपने कर्मचारियों तथा स्वयं सेवकों की सशस्त्र सेना बनायी।

उसने अपने सैनिकों को लेकर इटली के प्रांत सिसली तथा नेपल्स पर आक्रमण किये। इन रियासतों की अधिकांश जनता बूर्बों राजवंश के निरंकुश शासन से तंग होकर गैरीबाल्डी की समर्थक बन गयी।

गैरीबाल्डी ने यहाँ गणतंत्र की स्थापना की तथा विक्टर इमैनुएल के प्रतिनिधि के रूप में वहाँ को सत्ता सम्भाली।

1862 ई० में गैरीबाल्डी ने रोम पर आक्रमण की योजना बनाई, तो कावूर ने इसका विरोध किया। इसी बीच गैरीबाल्डी को भेंट कावूर से हुई और उसने रोम के अभियान की योजना त्याग दी। दक्षिणी इटली के जीते गए क्षेत्र को बिना किसी संधि के गैरीबाल्डी ने विक्टर इमैनुएल को सौंप दिया।

गैरीबाल्डी बिना शर्त के अपनी सारी सम्पत्ति राष्ट्र के नाम कर साधारण किसान की भांति जीवन जीने लगा।

1862 में गैरीबाल्डी के मत्यु के बाद रोम तथा वेनेशिया के रूप में शेष इटली का एकीकरण विक्टर इमैनुएल ने स्वयं किया।

1870–71 में फ्रांस और प्रशा के बीच युद्ध छिड़ गया जिस कारण फ्रांस के लिए पोप को संरक्षण प्रदान करना संभव नहीं था। विक्टर इमैनुएल ने इस परिस्थिति का लाभ उठाया।

इमैनुएल ने पोप के राजमहल को छोड़कर बाकी रोम को इटली में मिला लिया और उसे अपनी राजधानी बनायी।

इस प्रकार 1871 ई० तक इटली का एकीकरण मेजिनी, कावूर, गैरीबाल्डी जैसे राष्ट्रवादी नेताओं एवं विक्टर इमैनुएल जैसे शासक के योगदानों के कारण पूर्ण हुआ।

जर्मनी का एकीकरण

इटली और जर्मनी का एकीकरण साथ–साथ सम्पन्न हुआ।

आधुनिक युग में जर्मनी पुरी तरह से विखंडित राज्य था, जिसमें 300 छोटे–बड़े राज्य थे।

जर्मनी में राजनितिक, सामाजिक तथा धार्मिक विषमताएँ थी।

जर्मन एकीकरण की पृष्ठभूमि निर्माण का श्रेय नेपोलियन बोनापार्ट को दिया जाता है क्योंकि 1806 ई० में जर्मन प्रदेशों को जीत कर राईन राज्य संघ का निर्माण किया था।

उत्तरी जर्मनी में सबसे शक्तिशाली राज्य प्रशा था। वहीं दक्षिणी जर्मनी के लोगों के अंदर राष्ट्रवाद की कमी थी।

जर्मनी के एकीकरण में बुद्धिजीवियों, किसानों तथा कलाकारों, जैसे–हीगेल काण्ट, हम्बोल्ट, अन्डर्ट, जैकब ग्रीम आदि तथा शिक्षण संस्थानों एवं विद्यार्थियों का भी योगदान था।

शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने जर्मनी एकीकरण के उद्देश्य से **'ब्रूशेन शैफ्ट'** नामक सभा स्थापित की।

वाइमर राज्य का **येना विश्वविद्यालय** राष्ट्रीय आन्दोलन का केन्द्र था।0

1834 में जन व्यापारियों ने आर्थिक व्यापारिक समानता के लिए प्रशा के नेतृत्व में **'जालवेरिन'** नामक आर्थिक संघ बनाया, जो जर्मन राष्ट्रवाद को बढ़ावा दिया।

जर्मन राष्ट्रवादियों ने मार्च 1848 में पुराने संसद की सभा को फ्रैंकफर्ट में बुलाया। जहाँ यह निर्णय लिया गया कि प्रशा का शासक फ्रेडरिक विलियम जर्मन राष्ट्र का नेतृत्व करेगा।

फ्रेडरिक, जो एक निरंकुश एवं रूढ़िवादी विचार का शासक था, ने उस व्यवस्था को मानने से इंकार कर दिया।

फ्रेडरिक विलियम का देहान्त हो जाने के बाद उसका भाई **विलियम** प्रशा का शासक बना।

विलियम राष्ट्रवादी विचारों का पोषक था।

विलियम ने एकीकरण के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर महान कूटनितिज्ञ बिस्मार्क को अपना चांसलर नियुक्त किया।

जर्मनी का एकीकरण में बिस्मार्क

बिस्मार्क एक सफल कुटनीतिज्ञ था, वह हीगेल के विचारों से प्रभावित था।

वह जर्मन एकीकरण के लिए सैन्य शक्ति के महत्व को समझता था।

अतः इसके लिए उसने **'रक्त और लौह की नीति'** का अवलम्बन किया।

बिस्मार्क ने ऑस्ट्रिया के साथ मिलकर 1864 ई० में शेल्सविग और होल्सटिन राज्यों के मुद्दे को लेकर डेनमार्क पर आक्रमण कर दिया। क्योंकि उन पर डेनमार्क का नियंत्रण था।

जीत के बाद शेल्सविग प्रशा के अधीन हो गया और होल्सटिन ऑस्ट्रिया को प्राप्त हुआ।

Excellence Coaching Institute
By- Tabrej Alam

होल्सटिन में राष्ट्रवाद की भावना को बिस्मार्क बढ़ा दिया।
जब ऑस्ट्रिया उसे दबाने के लिए बढ़ी तो जर्मनी ऐसा करने से रोक दिया।
अपमान के कारण ऑस्ट्रिया ने 1866 ई. में जर्मनी के खिलाफ सेडोवा की युद्ध की घोषण कर दिया।
इस युद्ध में ऑस्ट्रिया बुरी तरह पराजित हुआ।
इस तरह जर्मन एकीकरण का दो तिहाई कार्य पुरा हुआ।
शेष जर्मनी के एकीकरण के लिए फ्रांस के साथ युद्ध करना आवश्यक था। क्योंकि जर्मनी क दक्षिणी रियासतों के मामले में फ्रांस हस्तक्षेप कर सकता था।
इसी समय स्पेन की राजगद्दी का मामला उभर गया, जिस पर प्रशा के राजकुमार की स्वाभाविक दावेदारी थी। लेकिन फ्रांस इसका विरोध कर रहा था।
स्पेन की उतराधिकार को लेकर 19 जून 1870 को फ्रांस के शासक नेपोलियन ने प्रशा के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी और सेडॉन की लड़ाई में फ्रांसीसियों की जबदस्त हार हुई।
तदुपरांत 10 मई 1871 को **फ्रैंकफर्ट की संधि** द्वारा दोनों राष्ट्रों के बीच शांति स्थापित हुई। इस प्रकार सेडॉन के युद्ध में ही एक महाशक्ति के पतन पर दूसरी महाशक्ति जर्मनी का उदय हुआ।
अंततः 1871 ई. तक जर्मनी का एकीकरण सम्पन्न हुआ।

जर्मन राष्ट्रवाद का प्रभाव

जर्मन राष्ट्रवाद ने केवल जर्मनी में ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण यूरोप के साथ–साथ हंगरी, बोहेमिया तथा यूनान में स्वतंत्रता आन्दोलन शुरू हो गये।
इसी के प्रभाव ने ओटोमन साम्राज्य के पतन की कहानी को अंतिम रूप दिया। बाल्कन क्षेत्र में राष्ट्रवाद के प्रसार ने स्लाव जाति को संगठित कर सर्बिया को जन्म दिया।

यूनान में राष्ट्रीयता का उदय

यूनान का अपना गौरवमय अतीत रहा है। जिसके कारण उसे पाश्चात्य का मुख्य स्रोत माना जाता था। यूनानी सभ्यता की साहित्यिक प्रगति, विचार, दर्शन, कला, चिकित्सा विज्ञान आदि क्षेत्र की उपलब्धियाँ यूनानियों के लिए प्रेरणास्रोत थे।
यूनान तुर्की साम्राज्य के अधीन था।
फ्रांसीसी क्रांति से यूनानियों में राष्ट्रीयता की भावना की लहर जागी, क्योंकि धर्म, जाति और संस्कृति के आधार पर इनकी पहचान एक थी।
हितेरिया फिलाइक नामक संस्था की स्थापना ओडेसा नामक स्थान पर की। इसका उद्देश्य तुर्की शासन को युनान से निष्काषित कर उसे स्वतंत्र बनाना था।
इंग्लैंड का महान कवि वायरन यूनानियों की स्वतंत्रता के लिए यूनान में ही शहीद हो गया। इससे यूनान की स्वतंत्रता के लिए सम्पूर्ण यूरोप में सहानुभूति की लहर दौड़ने लगा।
रूस भी यूनान की स्वतंत्रता का पक्षधर था।
1821 ई० में अलेक्जेंडर चिपसिलांटी के नेतृत्व में यूनान में विद्रोह शुरू हो गया।
1827 में लंदन में एक सम्मेलन हुआ जिसमें इंग्लैंड, फ्रांस तथा रूस ने मिलकर तुर्की के खिलाफ तथा यूनान के समर्थन में संयुक्त कार्यवाही करने का निर्णय लिया।
इस प्रकार तीनों देशों की संयुक्त सेना नावारिनो की खाड़ी में तुर्की के खिलाफ एकत्र हुई। तुर्की के समर्थन में सिर्फ मिस्र की सेना ही आयी।
युद्ध में मिश्र और तुर्की की सेना बुरी तरह पराजित हुई
1829 ई० में **एड्रियानोपल की संधि** हुई, जिसके तहत तुर्की की नाममात्र की प्रभुता में यूनान को स्वायत्ता देने की बात तय हुई।
परन्तु यूनानी राष्ट्रवादियों ने संधि की बातों को मानने से इंकार कर दिया।
1832 में यूनान को एक स्वतंत्र राष्ट्र घोषित कर दिया गया। बवेरिया के शासक **'ओटो'** को स्वतंत्र यूनान का राजा घोषित किया गया।

हंगरी में राष्ट्रीयता का उदय

हंगरी पर ऑस्ट्रिया का पूर्णतः प्रभाव था।
हंगरी में आंदोलन का नेतृत्व 'कोसुथ' तथा 'फ्रांसिस डिक' नामक क्रांतिकारी के द्वारा किया जा रहा था।
फ्रांस में लुई फिलिप के पतन का हंगरी के राष्ट्रवादी आन्दोलन पर विशेष प्रभाव पड़ा । कोसूथ ने ऑस्ट्रियाई आधिपत्य का विरोध करना शुरू किया तथा व्यवस्था में बदलाव की मांग करने लगा। इसका प्रभाव हंगरी तथा आस्ट्रिया दोनों देशों की जनता पर पडा। जिसके कारण यहाँ राष्ट्रीयता के पक्ष में आन्दोलन शुरू हो गए। 31 मार्च 1848 ई० को आस्ट्रिया की सरकार ने हंगरी की कई बातें मान ली, जिसके अनुसार स्वतंत्र मंत्रिपरिषद् की मांग स्वीकार की गई।
इस प्रकार इन आन्दोलनों ने हंगरी को राष्ट्रीय अस्मिता प्रदान की।

Excellence Coaching Institute By - Tabrej Alam

पोलैंडः

पोलेंड में भी राष्ट्रवादी भावना के कारण, रूसी शासन के विरुद्ध विद्रोह शुरू हो गए। 1830 ई. की क्रांति का प्रभाव यहाँ के उदारवादियों पर भी व्यापक रूप से पड़ा था परन्तु इन्हें इंग्लैंड तथा फ्रांस की सहायता नहीं मिल सकी। अतः इस समय रूस ने पोलेंड के विद्रोह को कुचल दिया।

बोहेमिया

बोहेमिया जो ऑस्ट्रियाई शासन के अंतर्गत था, में भी हंगरी के घटनाक्रम का प्रभाव पड़ा। बोहेमिया की बहुसंख्यक चेक जाति की स्वायत्त शासन की मांग को स्वीकार किया गया परन्तु आन्दोलन ने हिंसात्मक रूप धारण कर लिया। जिसके कारण ऑस्ट्रिया द्वारा क्रांतिकारियों का सख्ती से दमन कर दिया गया। इस प्रकार बोहेमिया में होने वाले क्रांतिकारी आन्दोलन की उपलब्धियाँ स्थायी न रह सकीं।

परिणाम

यूरोप में राष्ट्रीयता की भावना का विकास फ्रांसीसी क्रांति के समय से ही शुरू हुआ।

प्रत्येक राष्ट्र की जनता और शासक के लिए उनका राष्ट्र ही सब कुछ हो गया। इसके लिए वे किसी हद तक जाने के लिए तैयार रहने लगे।

बड़े यूरोपीय राज्यों यथा, जर्मनी, इटली, फ्रांस, इंग्लैंड जैसे देशों में राष्ट्रवाद की भावना बढ़ गई।

भारत में भी यूरोपीय राष्ट्रवाद के संदेश पहुँचने शुरू हो चुके थे। मैसूर का शासक टीपू सुल्तान स्वयं 1789 की फ्रांसीसी क्रांति से काफी प्रभावित था। इसी प्रभाव में उसने भी **जैकोबिन क्लब** की स्थापना करवाई तथा स्वयं उसका सदस्य बना।

यह भी कहा जाता है कि उसने श्रीरंगपट्टम में ही स्वतंत्रता का प्रतीक 'वृक्ष' भी लगवाया था।

बाद में भारत में 1857 की क्रांति से ही राष्ट्रीयता के तत्व नजर आने लगे थे।

इस प्रकार यूरोप में जन्मी राष्ट्रीयता की भावना ने पहले यूरोप को एवं अंततः पूरे विश्व को प्रभावित किया।

जिसके फलस्वरूप यूरोप के राजनैतिक मानचित्र में बहुत बड़े बदलाव के साथ–साथ कई उपनिवेश भी स्वतंत्र हुए।

2. समाजवाद एवं साम्यवाद

समाजवाद और साम्यवाद दोनों का उद्देश्य– समानता स्थापित करना है।

एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के समान हो।

किसी के साथ कोई भेद–भाव नहीं हो।

सब किसी को सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक समानता मिले।

समाजवाद की उत्पत्ति

समाजवादी भावना का उदय मूलतः 18 वीं शताब्दी में औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप हुआ था।

औद्योगिक क्रांति के दौरान पूँजीपतियों और मिल–मालिकों की श्रमिक विरोधी नीतियों के कारण सभी देशों के श्रमिक जीवन नरकीय बन गया था।

श्रमिकों को कोई अधिकार नहीं था और उनका क्रूर शोषण हो रहा था।

पूँजीवादी व्यवस्था दिन–प्रतिदिन मजबूत होती जा रही थी।

श्रमिकों की आर्थिक स्थिति का तेजी से पतन हो रहा था।

आर्थिक दृष्टि से समाज का विभाजन दो वर्गों में हो गया था–

(1) पूँजीपति वर्ग

(2) श्रमिक वर्ग

जिस समय श्रमिक जगत आर्थिक दुर्दशा और सामाजिक पतन की स्थिति से गुजर रहा था उसी समय श्रमिकों को कुछ महत्वपूर्ण राष्ट्र–भक्तों, विचारकों और लेखकों का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

इन व्यक्तियों ने सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में एक नवीन विचारधारा का प्रतिपादन किया जिसे 'समाजवाद' के नाम से जाना जाता है।

कार्ल मार्क्स के पहले के समाजवाद को यूटोपियन समाजवाद तथा कार्ल मार्क्स के बाद के समाजवाद को वैज्ञानिक समाजवाद के नाम से जाना जाता है।

यूटोपियन समाजवाद के जनक **सेंट साइमन** तथा वैज्ञानिक समाजवाद के जनक **कार्ल मार्क्स** थे।

समाजवाद एवं साम्यवाद में अंतर

समाजवाद	साम्यवाद
1. समाज को महत्व दिया जाता है।	1. साम्यवादी राज्य को समाप्त करना चाहते हैं। क्योंकि राज्य द्वारा शोषण करने वालो को बल मिलता

Excellence Coaching Institute By - Tabrej Alam